International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 8, August- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077 |
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

वर्तमान समय में बिहार में बेरोजगारी कीस्थिति

प्रयंका कुमारी
अर्थशास्त्र वभाग
एलएनएमयू दरभंगा

बेरोजगारी बिहार के लए एक प्रमुख मुद्दा है। शक्षा का अभाव ,रोजगार के अवसरों की कमी और जनसंख्या का तेजी से बढ़ना आदि बेरोजगारी का कारण बनती है । आज के समय में यह समस्या युवाओं के लए घोर निराशा का कारण बनी हुई है। यह एक गंभीर समस्या है। इसे दूर करने के लए सक्षम नेतृत्व की आवश्यकता है , सक्षम नेतृत्व जो बेरोजगारी उन्मूलन के खलाफ कठोर फैसले ले सके, जो रोजगार सृजन हेतु उद्योगों की स्थापना एवं सुचारू परिचालन कर सके , जो बिहार के राजस्व वृ द्ध हेतु भ्रष्टाचार मुक्त कार्य कर सकें तभी कहीं जाकर बेरोजगारी जैसे रोग से बिहार राज्य निजात पा सकेगा।

परिचय

बेरोजगारी वह अवस्था है, जब देश में कार्य करने हेतु जनमानस की बहुलता होती है परंतु काम करने योग्य होते हुए भी कईयों को प्रच लत मजदूरी दर पर कार्य नहीं मल पाता । प्र सद्ध अर्थशास्त्रीकीन्सकेअनुसारबेरोजगारी कसी भी समस्या में सबसे बड़ी समस्या है इसी कारण वह कहते थे क यदि कसी भी देश के पास बेरोजगारों से करवाने के लए कोई भी काम ना हो तो उनसे सर्फ गड्ढे खुदवा कर उन्हें भरवाना चाहिए ऐसा करवाने से बेरोजगार लोग भले ही कोई उत्पादक कार्य ना करें ले कन वे अन उत्पादक कार्यों में सं लप्त नहींहोंगे और देश में वस्तुओं और सेवाओं की मांग बनी रहेगी। जिससे देश में औद्यो गक वकास होता रहेगा ।बेरोजगारी का अस्तित्व श्रम की मांग एवं उसकी आपूर्ति के बीच स्थित अनुपात पर निर्भर करता है बेरोजगारी दो प्रकार के होते हैं

असंतुलन आत्मक बेरोजगारी

ऐच्छिक बेरोजगारी

असनतुलनात्मक बेरोजगारीश्रम की मांग में परिवर्तन के कारण होती है।ऐच्छिकबेरोजगारी का प्रभाव तब होता है जब मजदूर अपने वास्त वक मजदूरी में कटौती स्वीकार नहीं करता कुल मलाकर यह कहा जा सकता है क बेरोजगारी श्रम की मांग एवं आपूर्ति के बीच असंतु लत स्थिति का प्रतिफल है।भारतएक वकासशीलदेशहै जहां यह बेरोजगारी दिन प्रतिदिन अपना पांव ही पसार रहा है।यहां सब

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 8, August- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077 |

को अपने पसंद का काम चाहिए परंतु इसमें सफल कुछ ही लोग हो पाते हैं ।आज के समय में कई कंपनियां समय एवं धन के बचत हेतु नए डग्री धारियों या नए लोगों के प्र शक्षण में अपना सर नहीखपाना चाहते। यह एक बहुत बड़ी वजह है जो भारत के वकास के मार्ग के अवरोधक हैं।

आर सी एस कॉलेज ल लत नारायण म थला यूनिव र्सटी

वश्व की दूसरी सबसे बड़ी जनसंख्या वाले भारत जैसे देश में जब प्रत्येक स्त्री एवं पुरुष अपने पसंद का काम करने लगते हैं तो भारत को वश्व के अग्रणी देशों में शा मल होने से कोई ताकत नहीं रोक पाएगी।

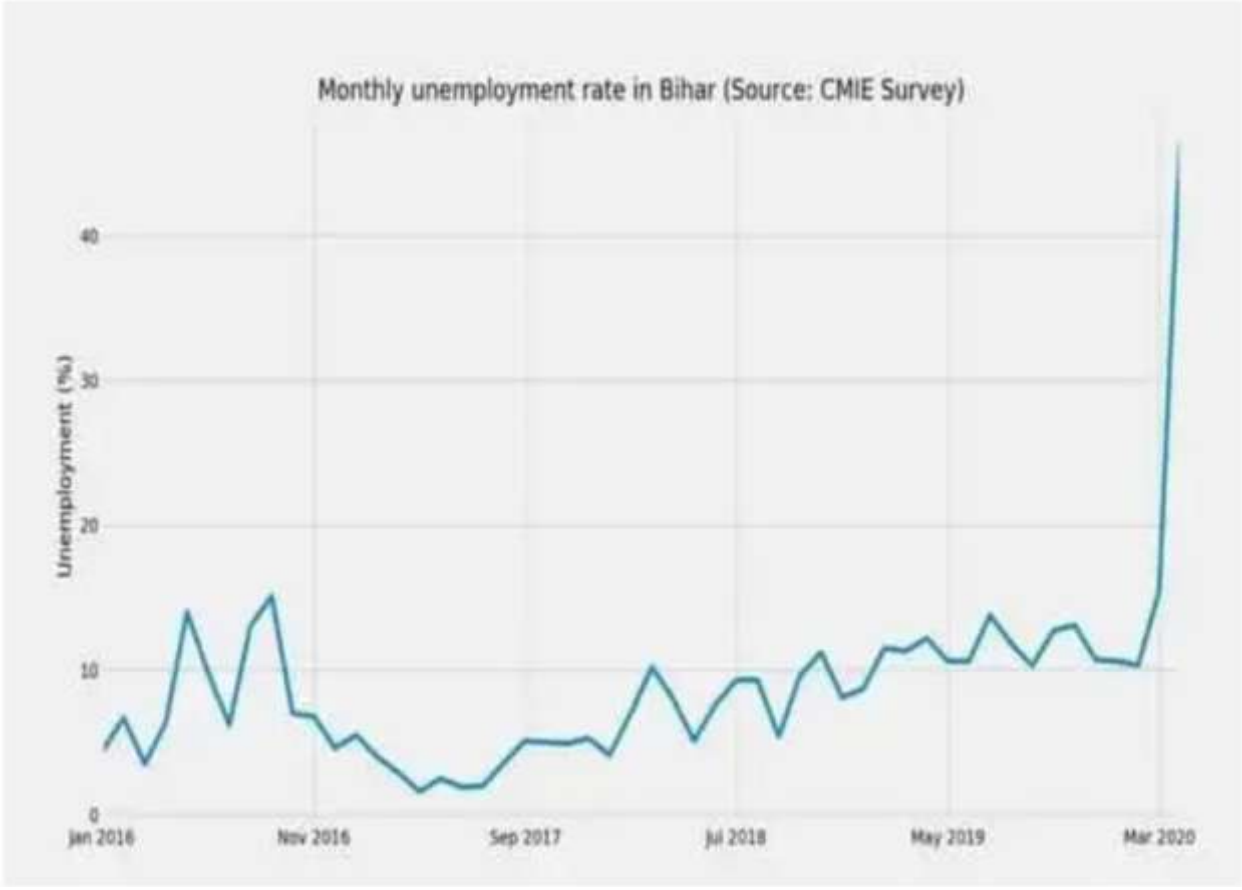

Monthly unemployment rate in Bihar (CMIE)

- सेंटरफॉरमॉनिटरिंगइं डयनइकोनॉमी (सी एम आई इ) के अनुसार बिहार में बेरोजगारी की दर की बढ़ोतरी 31.2 प्रतिशत बिंदुसे हुए हैं जो क अप्रैल 2020 तक बढ़कर 46.6

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 8, August- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077 |

प्रतिशत हो गई है । 2017 से बेरोजगारी की दर 1 .6 प्रतिशत से बड़ी है। बिहार में बेरोजगारी की दर राष्ट्रीय बेरोजगारी की दर से 23 पॉइंट 5 प्रतिशत ज्यादा है । देश में सबसे ज्यादा बेरोजगारी त मल नाडु (49 .8%) झारखंड (47 .1 %) और बिहार (46.6%) मैं है । और सबसे कम पंजाब (2 .9%) छत्तीसगढ़ (3 .4%) और तेलंगाना (6.2%)मेहै।सेंटर फॉरमॉनिटरिंगइं डयनइकोनॉमी की रिपोर्ट जून 2019 के अनुसार देश में सबसे ज्यादा बेरोजगारी पूर्वी बिहार में दर्ज की गई है।

सी एम आईइजनवरी 2020

नवीनतम डाटा के अनुसार बढ़ती हुई बेरोजगारी की दर का कारण बहुत अ धक देशव्यापी लॉकडाउन और कोरोना वायरस भी है। देश के दूसरे राज्यों की तुलना में बिहार में कामकाजी आयु वर्ग की बड़ी आबादी है। गनती लेबर सरप्लस स्टेट में होती है । काम की तलाश में बिहार से जिन राज्यों को सर्वा धक पलायन होता है उनमें दिल्ली पंजाब हरियाणा आदि प्रमुख है । ले कन सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इं डयन इकोनामी आंकरो से यह साबित होता है की वहां बिहार से अ धक बेरोजगारी है । रही बात रोजगार की तो एनएसओ केआंकड़ों से साफ है क राज्य के सर्फ 12% लोग नौकरी करते हैं और यह 18 प्रमुख राज्यों में सबसे कम है। बिहार में बेरोजगारी का यह आलम है क तीन में से एक ही युवा को काम मल पाता है । सीएमआईई का कहना है क सतंबर 2020 में 33 पॉइंट 8 प्रतिशत

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 8, August- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077 |

रोजगार की दर थी जो राष्ट्रीय औसत से 38% थीजब कजून से अगस्त की अव ध में यह केवल 30% थी उस समयराष्ट्रीय औसत 37% थी।बेरोजगारी एक रोग है जिससे समाज में अक्सर बेरोजगारों की वफलता के साथ जोड़ दिया जाता है।बेरोजगार व्यक्ति को उ चत सम्मान नहीं मल पाता है। यह एक व्यापक आ र्थक समस्या है जिससे सरकार को ठीक करने की आवश्यकता है । लोगों की आकांक्षाओं उनके सपनों और उनकी आजी वका को संवारने के लए सरकार को प्रयास करना चाहिए । गरीब राज्यों में बेरोजगारी की दर अ धक होना दोहरी मार के बराबर होती है जिससे वहां के लोगों को बहुत नुकसान उठाना पड़ता है । बिहार के आधे से ज्यादा युवा जीवन यापन के लए खेती पर निर्भर है, बिहार के 104 म लयन लोगों में से, 28 म लयन लोग 15 से 30 साल के बीच के हैं यह 27% आबादी है जो राष्ट्रीय औसत से 30% कम है। बिहार में कमाई का प्रमुख जरिया स्वरोजगार है जिस पर 56% कामकाजी आबादी निर्भर है । कामकाज में महिलाओं के हिस्सेदारी ग्रामीण क्षेत्रों में 3.9 प्रतिशत है और शहरी क्षेत्रों में 6. 4% है।बिहार में बेरोजगारी लगातार बढ़ रही है।महत्वपूर्ण बात यह है क भारत की बेरोजगारी दर बिहार की बेरोजगारी दर से कम है यानी क बिहार के बेरोजगारी दर भारत की बेरोजगारी दर से अ धक तेजी से बढ़ रहा है।सीएमआईई के आंकड़ों के अनुसार यह स्थिति और बदतर होती जा रही है। आंकड़ों की माने तो 2016 और 17 में बिहार में बेरोजगारी की दर अ खल भारतीय बेरोजगारी की औसत दर से कम थी।बिहार में बेरोजगारी के निम्न ल खत कारण है।

*जनसंख्या वृ द्ध

*आधारभूत संरचना की कमी

*भौगो लक संरचना

*कृ ष पर निर्भरता

*कल कारखानों तथा इंडस्ट्रीज की कमी

* शक्षा एवं जागरूकता की कमी

*पलायन

*लघु एवं कुटीर उद्योग की कमी

1)जनसंख्या वृ द्ध: 2011 की जनगणना के अनुसार बिहार की जनसंख्या लगभग 5.41 करोड़ थे जो क 2020 में लगभग दोगुनी हो चुकी है । सी मत संसाधन सस्ते मजदूर बेरोजगारी की समस्याओं

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 8, August- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077 |

जनसंख्या वृ द्ध एक मां की तरह है ।उदाहरण नार्थ,पूर्व में एक कार्य करने हेतु 5 लोग लगते थे तो अभी एक काम करने हेतु 10 लोग आसानी से तैयार मलते हैं । कम उत्पादन एवं अ धक मांगने बेरोजगारी की समस्या को आ धकारिक रूप से बढ़ावा दिया है । अगर जनसंख्या वृ द्ध को लेकर कोई कानून नहीं बनता तो बेरोजगारी की समस्या और वकराल रूप ले सकती है ।तेजी से जनसंख्या बढ़ने के कारण रोजगार के अवसरों में कमी आती है क्यों क जितनी तेजी से जनसंख्या बढ़ती है उतनी तेजी से रोजगार वक सत नहीं हो पाता है।

2) आधारभूत संरचना की कमी : बिहार में हम देखते हैं तो पाते हैं क बहुराष्ट्रीय कंपनियां शायद संजोग ही है । बहुराष्ट्रीय कंपनियां नौकरी पैदा करती है पर बिहार में ना कंपनियां है ना नौकरी । फलकता है बेरोजगारी की आम समस्या दृश्यमान होती है।

3) भौगो लक संरचना : बिहार की भौगो लक संरचना भी वकास के मार्ग कोयदाकदा प्रभा वत करती है। हिमालय के शवा लक रेंज की घाटी से बिहार में प्रवेश करने वाली नदियां हर वर्ष बाढ़ जैसे प्रकोप को पैदा करती है, फलत: नदियों के कनारे बसे क्षेत्र बुरी तरह से प्रभा वत होते हैं । लोग जान माल की सुरक्षा को प्राथ मकता देते हैं जब क उनके काम धंधे रोजगार सब छूट जाते हैं । इसके अलावा बिहार को दो भागों में बांटने वाली गंगा नदी में आए वर्षों में उफान तथा सहायक नदियों द्वारा कृ ष क्षेत्र में तबाही मचाते हैं ।अत: नदियों से घिरे बिहार में यह एक प्रमुख समस्या है जो बेरोजगारी को प्रमुखता से बढ़ावा देते हैं।

4) कृ ष पर निर्भरता: बिहार का उत्तरी भाग मैदानी क्षेत्र है, साथ ही साथ कई प्रमुख नदियों के साथ साथ सहायक नदियों से भी घिरी है । नदियों के कनारे काफी उपजाऊ क्षेत्र कृ ष पर आधारित अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देते हैं। परंतुअसमयबाढ़ की परिस्थिति उन लोगों को कार्य से वं चत कर देते हैं जो क आजी वका हेतु कृ ष पर निर्भर होते हैं । बिहार की एक बड़ी जनसंख्या इस वजह से बेरोजगारी का दंश झेलती है।

5) कल कारखानों एवं इंडस्ट्रीज की कमी : बिहार में यदा-कदा कल कारखाने देखने को मलते हैं । यह कल कारखाने एवं इंडस्ट्रीज बड़ी संख्या में रोजगार पैदा करते हैं ऊपर से कई इंडस्ट्री के बंद होने या बंद होने के कगार पर आने से रोजगार की समस्या जग जाहिर है जैसे बरौनी में फर्टिलाइजर (एच एफ सी), मोकामा में बाटा, मैकडोनाल्ड, भारत वैगन इत्यादि कई कारखाने बंद हो चुके हैं। इस प्रकार यह भी एक कारण है जो बेरोजगारी की समस्या को काफी बढ़ा चुके हैं।

6) शक्षा एवं जागरूकता की कमी : शक्षा के क्षेत्र में बिहार की दयनीय स्थिति बिहार में बेरोजगारी के मुख्य कारकों में अग्रणी है ।राज्य की शक्षा प्रणाली हमें वह शक्षा व योग्यता प्रदान करने में कहीं न

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 8, August- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077 |

कहीं और सक्षम रह जाते हैं तथा जिसका परिणाम बेरोजगारी के रूप में उभर कर आता है। शक्षा के अभाव में लोग जागरुक नहीं है जागरूकता के अभाव में पछड़ापन अपने चरम पर है।

7) लघु एवं कुटीर उद्योग की कमी :एक समय था जब बिहार में लघु एवं कुटीर उद्योगों की भरमार थी। फर घरेलू और छोटे उद्योगों का पतन होने लगा।जिन वस्तुओं का घरेलू उद्योग में उत्पादन होता था उन वस्तुओं का बड़े उद्योगों में उत्पादन होने लगा ,जिसके कारण लोगों को इस समस्या का सामना करना पड़ता है तथा घरेलू उद्योग समाप्त हो जाते हैं क्यों क सरकार की तरफ से भी घरेलू उद्योग को लोन तथा अन्य प्रकार की प्रोत्साहन नहीं मलता।समय गुजरने के साथ ही लघु एवं कुटीर उद्योग प्रोत्साहन के अभाव में लगातार दम तोड़ते रहे हैं और जब कोई उद्योग धंधा दम तोड़ता है तो लोग बेरोजगार ही होते हैं

8) पलायन: शक्षा का क्षेत्र हो या मजदूरी, हर स्थिति में एक बेहतर जीवन एवं आय की तलाश में बिहार के लोग अन्य राज्य अथवा देशों में लगातार रूप में कर रहे हैं ।बिहार में प्रतिभाओं की कमी नहीं है परंतु सम्मान भी नहीं है।

अगर पलायन रुकता हैतोएजुकेशनहबके रूप में, और मजदूरों, कामगारों, प्रोफेशनल को सही सम्मान मले तो आम दिखती बेरोजगारी की समस्या का अंत हो सकता है।

- तात्का लक कारण :मार्च 2020 से लगातार संपूर्ण वश्व को वड-19 की चपेट में है , जिसके कारण अर्थव्यवस्था उथल-पुथल हो चुकी है, काम बंद है तो रोजगार कहां?बाहर प्रदेश में काम करने वाले मजदूर ,पढ़ाई करने वाले छात्र , प्रोफेशनल्स सब इससे (को वड) से बुरी तरह प्रभा वत हुए हैं । उनके लए जीवन बचाना प्राथ मकता हो गई है पुराना के इस भयावह स्थिति ने रोजगार में ऐसी कमी उत्पन्न कया जिसकी वजह से बेरोजगारी अपने चरम पर है।

  इस प्रकार हम देख सकते हैं की अनेक अनेक कारण है जो बिहार में बेरोजगारी की समस्या को बढ़ावा दे रहे हैं।बिहार में बेरोजगारी की समस्या से निपटने के लए निम्न ल खत निदान रूपी कारको पर ध्यान दिया जा सकता है:

  जनसंख्या वृ द्ध पर रोक कानून : जनसंख्या पर नियंत्रण कर के भी हम इस समस्या का समाधान कर सकते हैं,हमें इससे संबं धत नीति नियम बनाने चाहिए तथा उनका पालन करना चाहिए। तभी हम इस समस्या का समाधान कर पाएंगे।

  एक कुशल प्रशासन : कुशल प्रशासन जो व्यक्ति एवं समाज के उत्थान के लए निर्देश और लगातार कार्य करता रहे।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 8, August- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077 |

नदियों पर बांध: कृ ष कार्य से उत्पन्न होने वाले रोजगार ओकेसुचारू ढंग से चलने के लए यह बहुत ही जरूरी है क बिहार में आने वाले हर साल बाढ़ को रोका जाए उस बाढ़ को रोकने के लए नए बांधव एवं जो बांध बने हुए हैं उनका सुदृढ़ीकरण होना चाहिए तब कहीं जाकर कृ ष पर जो निर्भर है कसान या फर मजदूर उनसे वह सभी अप्रत्यक्ष बेरोजगारी से बस सकेंगे।

तकनीकी कृ ष को बढ़ावा:परंपरागत रूप से चले आ रहे कृ ष में तकनीक का समावेशन बहुत ही ज्यादा आवश्यकता है तकनीकी कृ ष अर्थात वैसे कृ ष जिसमें वज्ञान का समावेश हो जहां भू म की म ी की जांच हो यहां उच्च गुणवत्ता के बीजों की उपलब्धता हो जहां मुझे पैदावार हो वहीं पर रोजगार सृजन होगा तभी जाकर बेरोजगारी पर अंकुश लग सकेगा।

लघु एवं कुटीर उद्योगों को बढ़ावा : सरकार को लघु उद्योगों को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। क्यों क वर्तमान समय में पूरा देश आ र्थक मंदी के दौर से गुजर रहा है और यहस्थिति कसी भी देश के लए चंताजनक है। अब समय है बंद पड़े उद्योग और नए उद्योगों को बढ़ावा देने का ता क ना केवल बेरोजगारों को रोजगार मले साथ ही देश की गरती हुई अर्थव्यवस्था को भी सहारा मले। उद्योगों को बढ़ावा देकर सरकार देश के व्यवसायियों में भी आत्म वश्वास उत्पन्न कर पाएगी। लघु उद्योगों को बढ़ावा देने के साथ ही कौशल शक्षा को शक्षा को बढ़ावा देना चाहिए, जिससे युवा स्वयं रोजगार सृजित कर सके। लोगों को स्वदेशी उत्पाद अपनाने के लए बढ़ावा देना चाहिए। सरकार को स्वदेशी उत्पादों पर ज्यादा टैक्स नहीं लगाना चाहिए ता क लोगों कोयह उत्पाद सस्ती कीमत पर मल सके।

वनिर्माण को बढ़ावा : आ र्थक मंदी के दौर मेंलोग बेरोजगार हो रहे हैं इस लए सरकार को वनिर्माण को बढ़ावा देना चाहिए ता क रोजगार का सृजन हो सके।

कुल मलाकर यह कहा जा सकता है की बेरोजगारी की समस्या से निपटने के लए सरकार को हर वो कदम उठाना चाहिए जो बिहार हो अग्रणी राज्यों की अ ग्रम पंक्ति में ला खड़ा करें। हालां कसरकार बिहार में बेरोजगारी की समस्या को नियंत्रित करने के लए कई उपाय कर रही है। परंतु सरकार को इस मामले की संवेदनशीलता को पहचानना चाहिए और इसे कम करने के लए कुछ गंभीर कदम उठाने चाहिए।

संदर्भ

सेंटरफॉरमॉनिटरिंगइं डयनइकोनॉमी (सीएमआईई– अ प्रल2020)

Tatsiramos,के.van Ours,J.C"Labor market effect of unemployment insurance desing"Journal of Economic surveys 28 (2014)284-311

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 8, August- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.077 |

Chetty R."moral hazard vs. liquidity optimal unemployment insurance" journal of political Economy 116:2(2008):173-234

Magioncalda,W.2010.Amodern insurgency : Indians evolving problem,Center for stratgic and Internationalstudies ,southern Asia monitor no.140,,April.availableat;http//csis.org/files/publication/sam 140-0.pdt(accessed:14January 2013)

Rajan s.I. 2011. Migration, identity and conflict. India migration, report (New Delhi, RoutledgeIndia

)ग्रोथ एंड अनइंप्लॉयमेंट इन इं डया (बाय एमएन उषा एंड प्रभाकर)

एजुकेटेड अनइंप्लॉयमेंट इं डया (जेपी सक्सेना)

रूरलपोवर्टीएंडअनएम्प्लॉयमेंटइन इं डया (रामाकांत बोहरे)

दकॉजऑफअन एम्प्लॉयमेंटइनकरेंटमार्केटसेकेनरियो (रूबी संह)